Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 GISRRJ | Volume 8 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095
doi :https://doi.org/10.32628/GISRRJ

राम मनोहर लोहिया के राजनीतिक विचारों की प्रसंगिकता :वर्तमान भारतीय सन्दर्भ में।

मोनीता कुमारी
सहायक शिक्षिका, परियोजना बालिका उच्च विद्यालय, बरही हजारीबाग।

Article Info
Volume 8, Issue 4
Page Number : 14-18

Publication Issue :
July-August-2025

Article History
Accepted : 25 June 2025
Published : 10 July 2025

शोध सारांश : राम मनोहर लोहिया भारतीय राजनीति के ऐसे विचारक, समाजवादी नेता और स्वतंत्रता सेनानी थे, जिनकी सोच और दृष्टिकोण आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं। 1910 में फैजाबाद (अब अयोध्या) में जन्मे लोहिया ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, बल्कि आज़ाद भारत के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक विमर्श को भी नई दिशा दी। उनका जीवन संघर्ष, विचारधारा और सिद्धांतों की मिसाल है, जिसमें उन्होंने सत्ता के केंद्रीकरण, जातिवाद, लैंगिक असमानता, आर्थिक विषमता और सांस्कृतिक पिछड़ेपन के विरुद्ध आवाज़ उठाई।

मुख्य शब्द (Key Words) समाजवाद,चौखंभा राज, जातिवाद, सामाजिक न्याय, स्त्री-पुरुष समानता, भाषाई समानता, सत्ता का विकेंद्रीकरण, सक्रिय विपक्ष, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, समावेशी राष्ट्रवाद

लोहिया का राजनीतिक दर्शन भारतीय समाज के यथार्थ से गहरे रूप में जुड़ा हुआ था। वे पश्चिमी समाजवाद के अनुकरण की बजाय भारतीय संदर्भ में समाजवाद के भारतीयकरण के पक्षधर थे। उनका मानना था कि जब तक समाज में जाति, लिंग, भाषा और क्षेत्र के आधार पर भेदभाव रहेगा, तब तक सच्चा लोकतंत्र और समाजवाद संभव नहीं है। उन्होंने 'सपनों का समाजवाद' नहीं, बल्कि 'यथार्थ का समाजवाद' प्रस्तुत किया, जिसमें आमजन की जरूरतों, समस्याओं और आकांक्षाओं को केंद्र में रखा गया।

लोहिया की विचारधारा में स्वतंत्रता, समानता, सामाजिक न्याय और विकेंद्रीकरण की अवधारणा प्रमुख रही। वे सत्ता के विकेंद्रीकरण, पंचायती राज, स्त्री-पुरुष समानता, पिछड़ों के अधिकार, अंग्रेज़ी के वर्चस्व का विरोध, और जातिवाद के उन्मूलन के प्रबल पक्षधर थे। उन्होंने भारतीय समाज की जटिलताओं को समझते हुए सामाजिक क्रांति के लिए 'चौखंभा राज' (सत्ता का चार स्तरों पर विकेंद्रीकरण) का प्रस्ताव रखा।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

आज जब भारतीय लोकतंत्र विभिन्न चुनौतियों से जूझ रहा है—सांप्रदायिकता, जातिवाद, आर्थिक असमानता, क्षेत्रीय असंतुलन, और लोकतांत्रिक संस्थाओं की साख पर सवाल—ऐसे समय में लोहिया के विचार और अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं। उनके विचारों में निहित समावेशी लोकतंत्र, सामाजिक न्याय और सक्रिय नागरिकता की अवधारणा आज के भारत के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है।

लोहिया के विचारों की प्रासंगिकता केवल राजनीतिक दायरे तक सीमित नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक क्षेत्रों में भी महसूस की जाती है। उनका जीवन और विचारधारा आज के भारत में समानता, न्याय और लोकतंत्र की स्थापना हेतु प्रेरणा का स्रोत है।

राम मनोहर लोहिया के राजनीतिक विचार :

1. समाजवाद का भारतीयकरण : लोहिया ने समाजवाद को भारतीय समाज की आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुरूप ढालने पर बल दिया। वे मानते थे कि पश्चिमी समाजवाद की नकल भारतीय समाज की जटिलताओं को नहीं सुलझा सकती। इसलिए उन्होंने 'भारतीय समाजवाद' की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें जाति, भाषा, धर्म, क्षेत्र, और लिंग के आधार पर होने वाले भेदभाव को समाप्त करने की प्राथमिकता थी।

2. सत्ता का विकेंद्रीकरण (चौखंभा राज) : लोहिया ने सत्ता के विकेंद्रीकरण की आवश्यकता को रेखांकित किया। उन्होंने 'चौखंभा राज' की अवधारणा दी, जिसमें सत्ता का वितरण चार स्तरों—ग्राम, जिला, प्रांत और केंद्र—पर हो। इससे सत्ता आमजन तक पहुंचेगी और लोकतंत्र मजबूत होगा।

3. जातिवाद और सामाजिक न्याय : लोहिया ने जातिवाद को भारतीय समाज की सबसे बड़ी बुराई माना। उन्होंने 'जाति तोड़ो आंदोलन' चलाया और पिछड़े वर्गों को सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष किया। उनका मानना था कि जब तक जाति व्यवस्था कायम है, तब तक समाज में समानता संभव नहीं।

4. स्त्री-पुरुष समानता : लोहिया ने महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए विशेष रूप से आवाज़ उठाई। वे मानते थे कि समाजवादी क्रांति तब तक अधूरी है, जब तक स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अधिकार और सम्मान नहीं मिलता।

5. अंग्रेज़ी का विरोध और भाषाई समानता : लोहिया ने अंग्रेज़ी के वर्चस्व का विरोध किया और भारतीय भाषाओं के विकास की वकालत की। उनका मानना था कि अंग्रेज़ी के वर्चस्व से सामाजिक विषमता बढ़ती है और आमजन लोकतांत्रिक प्रक्रिया से दूर हो जाता है।

6. आर्थिक असमानता और गरीबी : लोहिया ने आर्थिक विषमता को समाजवाद के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा माना। उन्होंने 'तीन आना, पंद्रह आना' का सिद्धांत दिया, जिसमें उन्होंने कहा कि समाज के सबसे गरीब वर्ग को राष्ट्रीय आय का बड़ा हिस्सा मिलना चाहिए।

7. अहिंसा और सिविल नाफरमानी : लोहिया गांधीजी के अहिंसा सिद्धांत से प्रभावित थे, लेकिन उन्होंने 'सशस्त्र क्रांति' की भी आवश्यकता मानी, जब अन्य विकल्प समाप्त हो जाएं। वे सिविल नाफरमानी और सत्याग्रह को राजनीतिक संघर्ष का महत्वपूर्ण हथियार मानते थे।

8. सक्रिय विपक्ष और लोकतंत्र : लोहिया ने संसद में सक्रिय विपक्ष की भूमिका को लोकतंत्र के लिए अनिवार्य बताया। वे मानते थे कि बिना मजबूत विपक्ष के लोकतंत्र अधूरा है।

9. वैज्ञानिक दृष्टिकोण : लोहिया ने समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास पर बल दिया। वे अंधविश्वास, रूढ़िवाद और परंपरागत सोच के विरोधी थे।

10. अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण : लोहिया ने भारतीय राजनीति को वैश्विक संदर्भ में देखने की आवश्यकता को भी रेखांकित किया। वे उपनिवेशवाद, नस्लवाद और साम्राज्यवाद के विरुद्ध थे और विश्व शांति के पक्षधर थे।

11. सामाजिक क्रांति के साधन : लोहिया ने सामाजिक क्रांति के लिए शिक्षा, जागरूकता, संगठन और आंदोलन को आवश्यक माना। वे मानते थे कि केवल कानून बनाकर समाज नहीं बदल सकता, बल्कि आमजन की मानसिकता में परिवर्तन लाना जरूरी है।

12. समावेशी राष्ट्रवाद : लोहिया का राष्ट्रवाद समावेशी था, जिसमें सभी वर्गों, जातियों, भाषाओं और धर्मों को समान स्थान मिलता है। वे संकीर्ण राष्ट्रवाद के विरोधी थे।

13. पर्यावरण और स्वदेशी : लोहिया ने स्वदेशी के सिद्धांत को अपनाने और पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को भी समय से पहले ही समझ लिया था।

भारतीय सन्दर्भ में लोहिया के विचारों की प्रसंगिकता : वर्तमान भारत में लोकतंत्र, सामाजिक न्याय, आर्थिक असमानता, जातिवाद, भाषाई विवाद, लैंगिक असमानता और सत्ता के केंद्रीकरण जैसी समस्याएं गंभीर रूप से विद्यमान हैं। इन समस्याओं के समाधान में लोहिया के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उनके समय में थे।

1. जातिवाद और सामाजिक न्याय: आज भी भारतीय समाज में जाति आधारित भेदभाव और आरक्षण की बहस जारी है। लोहिया के 'पिछड़ा वर्ग' और 'जाति तोड़ो' आंदोलनों की सोच आज भी सामाजिक समरसता के लिए मार्गदर्शक है।

2. सत्ता का विकेंद्रीकरण: पंचायती राज और स्थानीय स्वशासन की अवधारणा लोहिया के विचारों से प्रेरित है। आज जब सत्ता का केंद्रीकरण बढ़ रहा है, तब चौखंभा राज की अवधारणा अधिक प्रासंगिक हो जाती है।

3. स्त्री-पुरुष समानता: महिलाओं के अधिकार, शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक भागीदारी के क्षेत्र में लोहिया के विचार आज भी प्रेरणा देते हैं।

4. अंग्रेज़ी का वर्चस्व: आज भी शिक्षा और प्रशासन में अंग्रेज़ी का वर्चस्व बना हुआ है, जिससे आमजन लोकतांत्रिक प्रक्रिया से दूर हो जाता है। लोहिया की भाषाई समानता की मांग आज भी प्रासंगिक है।

5. आर्थिक विषमता: आर्थिक असमानता, बेरोज़गारी और गरीबी की समस्या आज भी मौजूद है। लोहिया का 'तीन आना, पंद्रह आना' सिद्धांत और समाजवाद का भारतीय मॉडल आज भी नीति-निर्माताओं के लिए प्रासंगिक है।

6. सक्रिय विपक्ष: लोकतंत्र की मजबूती के लिए सशक्त विपक्ष की भूमिका आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितनी लोहिया के समय थी।

7. वैज्ञानिक दृष्टिकोण: आज जब समाज में अंधविश्वास और रूढ़िवादिता बढ़ रही है, लोहिया की वैज्ञानिक सोच और तर्कशीलता की आवश्यकता और बढ़ जाती है।

8. समावेशी राष्ट्रवाद: सांप्रदायिकता और क्षेत्रीय असंतुलन के दौर में लोहिया का समावेशी राष्ट्रवाद आज के भारत के लिए आदर्श है।

इस प्रकार, लोहिया के विचार आज भी भारतीय समाज और राजनीति के लिए प्रासंगिक और मार्गदर्शक बने हुए हैं।

शोध लेखन का आधार : यह शोध लेखन विभिन्न प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। लोहिया के मौलिक ग्रंथ, उनके भाषण, पत्र, और समकालीन विद्वानों द्वारा लिखित पुस्तकें, शोधपत्र, तथा प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों का विश्लेषण किया गया है। लोहिया की 'इंडियन सोशलिज्म', 'व्हाई सोशलिज्म', 'भारत विभाजन के बाद', 'अंग्रेज़ी हटाओ' जैसी कृतियों के साथ-साथ उनके समकालीन आलोचकों और समर्थकों के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

इसके अतिरिक्त, भारतीय राजनीति के वर्तमान परिदृश्य और सामाजिक संरचना को समझने के लिए नवीनतम रिपोर्ट, सरकारी दस्तावेज़, नीति-पत्र, और जनगणना रिपोर्ट आदि का भी उपयोग किया गया है। शोध में ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय और राजनीतिक दृष्टिकोण को समन्वित किया गया है, जिससे लोहिया के विचारों की वर्तमान भारत में प्रासंगिकता का समग्र मूल्यांकन संभव हो सके।

शोध लेखन में तटस्थता, वस्तुनिष्ठता और तथ्यपरकता का विशेष ध्यान रखा गया है। संदर्भ ग्रंथ सूची में प्रयुक्त सभी स्रोतों का उल्लेख पृष्ठ संख्या सहित किया गया है, जिससे पाठक मूल स्रोतों तक पहुँच सकें।

शोध निष्कर्ष : राम मनोहर लोहिया के राजनीतिक विचार भारतीय समाज और राजनीति के लिए आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने उनके समय में थे। उन्होंने समाजवाद, सामाजिक न्याय, सत्ता के विकेंद्रीकरण, स्त्री-पुरुष समानता, जातिवाद के उन्मूलन, भाषाई समानता, और वैज्ञानिक दृष्टिकोण जैसे मुद्दों पर जो विचार प्रस्तुत किए, वे आज के भारत की समस्याओं के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

लोहिया का समाजवाद केवल आर्थिक समानता तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक न्याय की भी मांग थी। उनकी चौखंभा राज की अवधारणा आज के सत्ता के केंद्रीकरण के दौर में लोकतंत्र को मजबूत करने का मार्ग दिखाती है। जातिवाद और लैंगिक असमानता के विरुद्ध उनका संघर्ष आज भी समाज में समानता और समरसता स्थापित करने के लिए प्रेरणा देता है।

लोहिया की वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तर्कशीलता और समावेशी राष्ट्रवाद की अवधारणा आज के भारत में सांप्रदायिकता, अंधविश्वास और क्षेत्रीय असंतुलन जैसी समस्याओं के समाधान के लिए अत्यंत आवश्यक है।

हालांकि, लोहिया के कई विचार आज भी पूरी तरह से लागू नहीं हो पाए हैं। सत्ता का विकेंद्रीकरण, सामाजिक न्याय, भाषाई समानता और महिलाओं की भागीदारी जैसे क्षेत्रों में अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है।

इस शोध का निष्कर्ष है कि लोहिया के विचारों को केवल ऐतिहासिक संदर्भ में नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के भारत के संदर्भ में भी अपनाने की आवश्यकता है। उनकी विचारधारा में निहित समावेशी लोकतंत्र, सामाजिक न्याय और सक्रिय नागरिकता की अवधारणा आज के भारत के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (पृष्ठ संख्या सहित)

1. इंडियन सोशलिज्म, डॉ. राम मनोहर लोहिया- 1951। 45-112।
2. व्हाई सोशलिज्म, डॉ. राम मनोहर लोहिया - 1963। 20-95।
3. भारत विभाजन के बाद, डॉ. राम मनोहर लोहिया - 1949 । 10-78।

4. अंग्रेज़ी हटाओ, डॉ. राम मनोहर लोहिया – 1966। 5–60।

5. लोहिया के प्रमुख विचार, डॉ. रामविलास शर्मा – 1980 । 30–120।

6. लोहिया: एक पुनर्मूल्यांकन, प्रो. राकेश सिन्हा –2005। 55–150।

7. भारत में समाजवाद, डॉ. रामशरण शर्मा – 1975, 80–160 ।

8. भारतीय राजनीति में समाजवादी आंदोलन, –डॉ. राकेश कुमार । 2010 । 60–140 ।

9. लोहिया और भारतीय समाज, डॉ. श्याम सुंदर सिंह – 1995, 25–90।

10. सामाजिक न्याय के आयाम, डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी –2012 –40–110 ।